Bhaktamar Stotra 48

॥ जिन-स्तुति-फल मंत्र ॥

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र गुणैर्निबद्धाम्,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठ-गता-मजस्रं,
तं मानतुंग-मवशा-समुपैति लक्ष्मी: ॥48॥

श्लोक का अर्थ

"नाथ, आपके ज्ञान के बाग की जो सुगंध है, वही मुझे प्राप्त हो। इसी सुगंध में बंध कर, मैं निर्भय होकर जीवन के संघर्षों को पार कर पाऊं।" ऐसा अनुरोध भक्त की ओर से प्रभु से किया जाता है।"
इस श्लोक में भगवान के गुणों की सुंदर व्याख्या है, जो भक्त के दिल में भक्ति और समर्पण की गहरी भावना जगाते हैं। हर श्लोक भगवान के प्रति प्रेम और श्रद्धा बढ़ाता है, और इसे पढ़ने या सुनने से भक्त की आध्यात्मिक उन्नति होती है और मुक्ति का मार्ग सरल बनता है।

मानतुंग मुनिवर की भक्ति का उदाहरण हमें दिखाता है कि भगवान के प्रति समर्पण कितनी गहरी हो सकती है। यही समर्पण भक्तामर स्तोत्र लिरिक्स में भी दिखाई देता है, जो ऋषभदेव की महिमा और उनके दिव्य गुणों को दर्शाता है। इन श्लोकों का पाठ करने से श्रद्धालु को आध्यात्मिक शांति और आत्मिक संतुलन मिलता है।